लोक नाट्य परम्परा सांग-दशा और दिशा

डॉ. शचि शुक्ला
सहायक प्रोफेसर, संगीत विभाग
आर्य गर्ल्ज़ कॉलेज, अम्बाला छावनी, हरियाणा

हरियाणा राज्य में पारम्परिक संगीत की परंपरा का संबंध वैदिक काल से जोड़ा गया है। इस राज्य के कई गांवों तथा शहरों का नाम विभिन्न रागों के नामों पर रखा गया। हरियाणा राज्य के लोक संगीत की जड़ें शास्त्रीय संगीत से जुड़ी हैं। हरियाणा राज्य के लोक संगीत को दो भागों में बांटा जा सकता हैः–(1) शास्त्रीय रूप (2) प्रादेशिक संगीत। इसके शास्त्रीय रूप में आल्ला, जयमल–फत्ता, ब्रहमा, तीज गीत, फाग, होली गीत आते हैं तथा प्रादेशिक संगीत में पौराणिक कथाएं जैसे पूरन भगत (राग मांड में), रिवाइती गीत, मौसमी गीत, कथाएं आती हैं।

हरियाणाा के जोगी, भाट तथा सांग संगीतकारों द्वारा हरियाणा राज्य के लोक संगीत को लोकप्रिय बनाया गया है। हालांकि आज इन कलाकारों की गिनती कम हो रही है तथा इन कलाओं को देखने–सुनने वाले लोगों की संख्या भी कम हो रही है परन्तु फिर भी यह कहा जा सकता है कि इनके द्वारा आज भी हरियाणा राज्य की लोक परंपरा को बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

इस आलेख में हम 'सांग संगीत' के बारे में चर्चा करेंगेः–

'सांग' को स्वांग, स्वैंग भी कहा जाता है। इसका अर्थ है नकल करना (Imitation)। यह एक प्रचलित लोक कला है जोकि राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश तथ मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र में प्रसिद्ध है। इस कला में पौराणिक कहानियों, लोक कथाओं को 10–12 कलाकारों के समूह में, खुले मंच पर तथा श्रोताओं के मध्य प्रस्तुत किया जाता है। 'स्वांग' भारत की एक प्राचीन लोक कला है। इसी से नौटंकी, सांग, तमाशा आदि का जन्म हुआ।

हरियाणा राज्य में गांव खंडा, सोनीपत के दीप चंद ब्राह्मण का नाम इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है। उन्हें हरियाणा का शेक्सपीयर तथा कालिदास जाना जाता था। इन्होंने 'अली बक्श' जो कि हरियाणा लोकमंच के जन्मदाता हैं,के द्वारा स्थापित किए गए लोक मंच तरीकों में और कुछ नए सुधार, बदलाव लाने का कार्य किया। उस समय सांग के दो प्रकार थे (1) कीर्तन प्रकार (2) नौटंकी प्रकार। दीप चंद द्वारा निर्मित सांग प्रकार में संगीत, नृत्य, मूकाभिनय, छन्दोव्यवस्था, गाथा गीत उच्चारण आदि अंगों का मिश्रण था। प्रथम विश्व युद्ध के दौरान उनकी कला चरम सीमा पर थी। उन्हें अंग्रेजी सरकार द्वारा 'राय साहब' की उपाधि तथा अन्य लाभ प्रदान किए गए। इनके अतिरिक्त स्वांग की उत्पत्ति का सम्बन्ध किशन लाला भाट जी से भी रहा जिन्होंने लगभग 200 वर्ष पहले के समय में भी आधुनिक काल की तरह के लोक मंच की कल्पना की। इसके अतिरिक्त मेरठ के कवि शंकर दास, रेवाड़ी के अली बक्श का नाम भी उल्लेखनीय है। इस समय में स्वांग की पांच प्रणालियां या घराने रहेः– दीप चन्द बाहमन, पं. लखनी चन्द, जाट मेहर सिंह, बाजे भगत,पं. मांगे राम।

पं. लखमी चंन्द प्रणाली से पं. सूर्य भानू शास्त्री तथा उनके शिष्य डॉ. सतीश कश्यप तथा डॉ. संध्या शर्मा द्वारा कई प्रसिद्ध स्वांग, सांगों का मंच प्रदर्शन किया गया जैसे कि पदमावत, कीचक द्रौपदी, फूल सिंह नौटानी, जानी चोर आदि। पं. नाथू राम (विख्यात स्वांगी) ने भी कई शिष्य तैयार किए जिनमें से मान सिंह, बुल्ली, दीना लोहार, राम सिंह प्रसिद्ध हैं। इस स्वांग कला को लोकप्रिय बनाने के प्रयास कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय स्तर पर भी किए गए हैं जिनमें अनूप लाठर जी का नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने विश्वविद्यालय स्तर पर स्वांग यूथ फैस्टीवल शुरू करवाया। मनीश जोशी बिसमिल जी का नाम भी इस क्षेत्र में उल्लेखनीय है।

हरियाणवी सांग तथा रागिनी कला क्षेत्र में नारनौद (हिसार) के पं. रामकिशन व्यास जी का नाम प्रसिद्ध है। इन्हें रोहतक आकाशवाणी तथा कुरूक्षेत्र आकाशवाणी में काउंसलर तथा कन्सलटैंट नियुक्त किया गया है। हरियाणा सरकार द्वारा हरियाणा प्रदेश के सभी विश्वविद्यालयों में इनकी जीवनी तथा रागिनीयों को पाठ्यक्रम में शामिल करने का कदम उठाया गया है।

डॉ. सतीश कश्यप, डॉ. संध्या शर्मा द्वारा आधुनिक स्वांग के रूपों में नए प्रयोग किए गए हैं ताकि इसे आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवित

रखा जा सके परन्तु अभी भी इस कला को एक नई उर्जा की आवश्यकता है क्योंकि युवा वर्ग इन कलाओं में रूचि नहीं दिखा रहा है।

सांग संगीत दशाः

- सांग संगीत जोकि हरियाणा की पुरातन लोक संस्कृति को दर्शाता आ रहा है, आज उसकी दशा शोचनीय है। केवल सांग संगीत ही नहीं, गांवों में प्रचलित ऐसे कई रीति–रिवाज़ों से सम्बन्धित लोक गीत हैं जो आज हमसे छिनते जा रहे हैं। न तो उन्हें सिखाने वाला कोई रहा और न ही उन्हें सीखने वाला कोई रहा। ऐसा करते–करते न जाने हमने अपनी सभ्यता संस्कृति से जुड़ी कितनी ही कलाओं को खो दिया है। 'सांग' संगीत तथ ऐसी तमाम कलाओं से प्राप्त होने वाले मनोरंजन का स्थान आधुनिक समय में प्रचलित टी.वी., रेडियो, मोबाईल, इन्टरनेट ने ले लिया है और अब तो रेडियो और टी.वी. की उपयोगिता भी कम हो रही है क्योंकि सारी टैक्नालोजी मोबाईल में उपलब्ध हो चुकी है। जहां नित नए–नए ऐपस, हमारे लिए नए–नए तरीकों से मनोरंजन उपलब्ध करवा देते हैं। ऐसे में हमें न तो टी.वी. की जरूरत है, न रेडियो की और न ही किसी अन्य साधन की। बस मोबाईल ही काफी है।
- 'सांग' संगीत केवल मनोरंजन का साधन मात्र नहीं था। इसमें दर्शकों को पौराणिक कथाएं, शूरवीरों की कहानियां, किस्से गाकर, नाचकर, अभिनय द्वारा सुनाए जाते थे। ये कार्य मनोरंजन के साथ–साथ एक व्यक्ति को उसकी सभ्यता–संस्कृति के साथ जोड़ता था। लोग अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर इकट्ठे बैठकर इनका आस्वादन करते थे। कला तथा कलाकार का सम्मान होता था, यह उनकी आजीविका का साधन था। परन्तु अब प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में इतना व्यस्त हो चुका है कि उसके पास दो घड़ी इकट्ठे बैठने का, कलाओं को देखने, सराहने का समय ही नहीं है।
- 'सांग' संगीत हरियाणा लोक संगीत का अंग है जब तक ये कलाएं जीवित रहेंगी तब तक हम और हमारा युवा वर्ग अपनी पुरातन सभ्यता से जुड़ा रहेगा। इन कलाओं के पतन के साथ–साथ ही हमारा जीवन भी पतन की ओर अग्रसर होगा।
- सांग संगीत से जुड़े कलाकार ग्रामीण, गरीब, अनपढ़ हैं। इन्होंने जो अपनी संस्कृति से पाया वही आगे की पीढ़ियों को दे रहे हैं परन्तु बदले

में इन्हें कुछ प्राप्त नहीं हो रहा है। इन कलाओं से इनका पेट नहीं भर सकता अर्थात वह इन कलाओं के आसरे अपना जीवन निर्वहन नहीं कर सकते।

- सांग संगीत जैसी लोक कलाओं को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने हेतु होने वाले प्रयास अभी पर्याप्त नहीं हैं। विश्वविद्यालय स्तर पर करवाए जाने वाले युवक मेलों में इसे एक प्रस्तुति के रूप में स्वीकार कर लेने मात्र से इस पुरातन कला को सुरक्षित नहीं रखा जा सकता। अर्थात सांग संगीत की दशा यह है कि इन्हें सीखने, सिखाने वाले कलाकारों की संख्या निरन्तर कम होती जा रही है। युवा वर्ग इसे एक ग्रामीण लोक कला समझ कर इसे सीखने में रूचि नहीं दिखा रहे हैं।

सांग संगीत को पुनः लोकप्रिय बनाने हेतु नई दिशा अर्थात सुझावः–

- सांग संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए इसके रुप में बदलाव लाने की जरुरत नहीं है और न ही इसका पश्चिमीकरण करने की जरुरत है। केवल यह प्रयास किया जा सकता है कि इसमें गाए जाने प्रसंगों में नए विषयों को जोड़ा जाए ताकि इस कला से मनोरंजन के साथ–साथ किसी बड़ी सामाजिक समस्या का निवारण हो सके। पौराणिक कथाओं के अलावा यदि इसमें भ्रूण हत्या, दहेज, घरेलू हिंसा, बेरोजगारी, गरीबी, भ्रष्टाचार, नशा आदि विषय भी शामिल किए जाए तो इसे आधुनिक युग से जोड़ा जा सकता है तथा युवाओं को इसके लिए शिक्षित किया जा सकता है।
- सांग संगीत में उपर्युक्त सामाजिक बुराईयों को दर्शाने के अलावा कई सामाजिक सुधार के मुद्दे जैसे स्वच्छता, शिक्षा, बेटी बचाओ बेटी पढाओ, राष्ट्र भक्ति, साम्प्रदायिक एकता, सांस्कृतिक उत्थान, देश के वीरों की गौरव गाथाओं का गान आदि को मुख्य विषयों के रुप में भी उठाया जा सकता है। इससे यह कला पुनः जीवित हो सकती है तथा हमारा युवा वर्ग जो कि अपने भविष्य को लेकर चिंतित रहता है वह इस कला के माध्यम से अपनी बात समाज के आगे रख सकता है।
- सांग संगीत के कलाकारों को सरकार की ओर से सहायता दी जानी चाहिए ताकि वह पूरे उत्साह से इस कला के प्रचार–प्रसार में अपना योगदान दें और उन्हें धन तथा आजीविका के अभाव में इस कला को छोड़ कर कोई अन्य कार्य करने के लिए मजबूर न होना पड़े।

- सांग संगीत के प्रचार–प्रसार के लिए समय–समय पर स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में इन कलाओं का मंचन किया जाना चाहिए तथा इसमें युवाओं से सम्बन्धित, उनके भविष्य तथा स्वास्थ्य से सम्बन्धित ज्वलंत मुद्दे भी उठाए जाने चाहिए ताकि युवा वर्ग को उनके जीवन तथा उनकी संस्कृति से अवगत करवाया जा सके।
- स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में समय–समय पर विभिन्न विषयों की कार्यशालाएं (Workshops) लगाई जाती हैं। इसी के तहत युवा वर्ग को उनकी कला संस्कृति से जोड़ने के लिए सांग संगीत जैसी पुरातन विधाओं को भी कार्यशालाएं होनी चाहिए। इन कार्यशालाओं में ही सांग कलाकार खुले वातावरण में प्रतिभागी छात्र–छात्राओं को इन कलाओं को निभाना सिख सकते हैं।
- सांग संगीत का स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों में तथा प्रमुख सामाजिक, राजनैतिक कार्यक्रमों में अधिक से अधिक मंचन करके भी इस कला को पुनः लोकप्रिय बनाया जा सकता है।
- वैसे तो दूरदर्शन पर सांग संगीत, रागिनी आदि तथा प्रसारण किया जाता है परन्तु जैसा कि पहले बताया गया है कि दूरदर्शन पर सांग के माध्यम से नए–नए सामाजिक सुधार, कुरीतियों आदि विषयों का प्रर्दशन करके भी इसे लोकप्रिय बनाया जा सकता है।
- यह मेरा व्यकितगत मत है कि इन लोक कलाओं के उपर पुस्तकें लिखने का कार्य बहुत ही कम होता है। ज्यादातर पुस्तकें उन्हीं प्रचलित विषयों पर प्राप्त होती हैं जिनके विषय में जानकारी प्राप्त करना सरल होता है। पुरातन कलाओं जैसे कि सांग संगीत को ही ले लें, आदि विषयों पर पुस्तकें प्राप्त नहीं होती। इन विषयों पर यदि पुस्तकें लिखी जाएं तथा सांग संगीत के स्वरुप, महत्व, विषयों की लिखित जानकारी भी प्राप्त करना सरल हो जाए तो यह कदम भी इस कला को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने में कारगर साबित होगा।
- इन लोक कलाओं पर कोई शोधार्थी अपना शोध पत्र नहीं लिखता, न ही पी.एच.डी. के लिए ऐसी पुरातन कलाओं को विषय के रुप में चुना जाता है। इन विषयों को युवा वर्ग में लोकप्रिय करने तथा भविष्य के लिए सुरक्षित करने हेतु इन विषयों में शोध किया जाना चाहिए, इससे इस लोक कला का महत्व बढ़ेगा।

अन्त में मैं यही कहूंगी कि जिस प्रकार हम कह देते हैं कि आज के युवा वर्ग को उनकी पुरातन सभ्यता, सांस्कृति से जोड़ना बहुत आवश्यक है उसी प्रकार पुरातन संस्कृति का आज के युवा वर्ग की मनोस्थिति से जुड़ना भी अत्यावश्यक है। आज हम अच्छी आजीविका कमा रहे हैं, अच्छे पद, प्रतिष्ठा, मान सम्मान का लाभ उठा रहे हैं और हम बड़ी–बड़ी बातें कर पा रहे हैं कि ये सुधार होना चाहिए, वो सुधार होना चाहिए परन्तु हमारी युवा पीढ़ी तो आधुनिक भारत की इन भयावय समस्याओं से साक्षात जूझ रही है। वह अपने भविष्य को लेकर चिंतित है कि क्या वह भी कभी अपने अविभावकों की भांति अच्छी पद–प्रतिष्ठा प्राप्त कर पाएंगे? ऐसे विकट दौर में उनका ध्यान अपनी कला–संस्कृति की धरोहर को बचाने की ओर नहीं जाता और वह बस अपना भविष्य बनाने के रास्ते खोजते हैं। उन्हें लगता है इन पुरातन कलाओं को अपनाकर वह मात्र मनोरंजन ही प्राप्त कर सकते हैं, कोई रोजगार नहीं। इसलिए वह नए–नए तकनीकी कोर्सेज़, कम्पयूटर कोर्सेज़ या अन्य डॉक्टरी, इंजीनियरिंग आदि क्षेत्रों में भविष्य बनाना चाहते हैं और बहुत से युवा तो विदेशों में जाकर कार्य करने तथा बस जाने के सपने भी देखते हैं ताकि वह खूब धन अर्जित कर सकें तथा एक सफल व्यक्ति बन सकें। इन सभी समस्याओं के चलते हमारा युवा वर्ग कला क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना नहीं चाहता। उस पर से सांग संगीत जैसी पुरातन लोक कला के कलाकार बनकर आजीविका कमाने की बात वह नहीं सोच पाते। इन कला क्षेत्रों में कठोर परिश्रम के बावजूद भी अधिक धन अर्जित नहीं हो सकता, ऐसी सोच आज के युवा वर्ग की होती जा रही है। इस समस्या का समाधान सरकार द्वारा ही निकाला जा सकता है। इन लोक कलाओं तथा इससे जुड़े कलाकारों को सरकार द्वारा संरक्षित करने के कदम उठाए जाने चाहिए तभी सांग–संगीत जैसे पुरातन लोक विद्या को आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित जा सकता है।

सहायक पुस्तक सूची

1. हरियाणवी लोक–गीत–कृष्णा मान
2. हरियाणा के लोक नृत्य–गीत–सुधीर शर्मा
3. हरियाणा के लोकगीत–संजीव कुमारी
4. भारतीय संगीत और मनोविज्ञान–वसुधा कुलकर्णी
5. कोशिश संगीत समझने की–केशवचन्द्र वर्मा

6. संगीत संचयन–सुभद्रा चौधरी
7. संगीत साहित्य और उदात्त के तत्व–डॉ. हरद्वारी लाल शर्मा
8. भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण–डॉ. स्वतंत्र शर्मा
9. हिन्दुस्तानी संगीतः परिवर्तनशीलता–असित कुमार बनर्जी
10. सांगीतिक योग्यता में वशानुक्रम एवं वातावरण का योगदान–डॉ. विजय लक्ष्मी गोयल
11. उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा–तृप्त कपूर
12. संगीत सम्पदा–डॉ. माया टाक
13. सांगितिक निबंध माला–डॉ. सीमा जौहरी